आदमी और लोमड़ी

इदरीस शाह

आदमी और लोमड़ी

इदरीस शाह

बहुत पुरानी बात है, तब चाँद पेड़ पर उगता था और चींटियों को अचार बहुत पसंद था, तब एक प्यारी सी भूरी लोमड़ी थी.
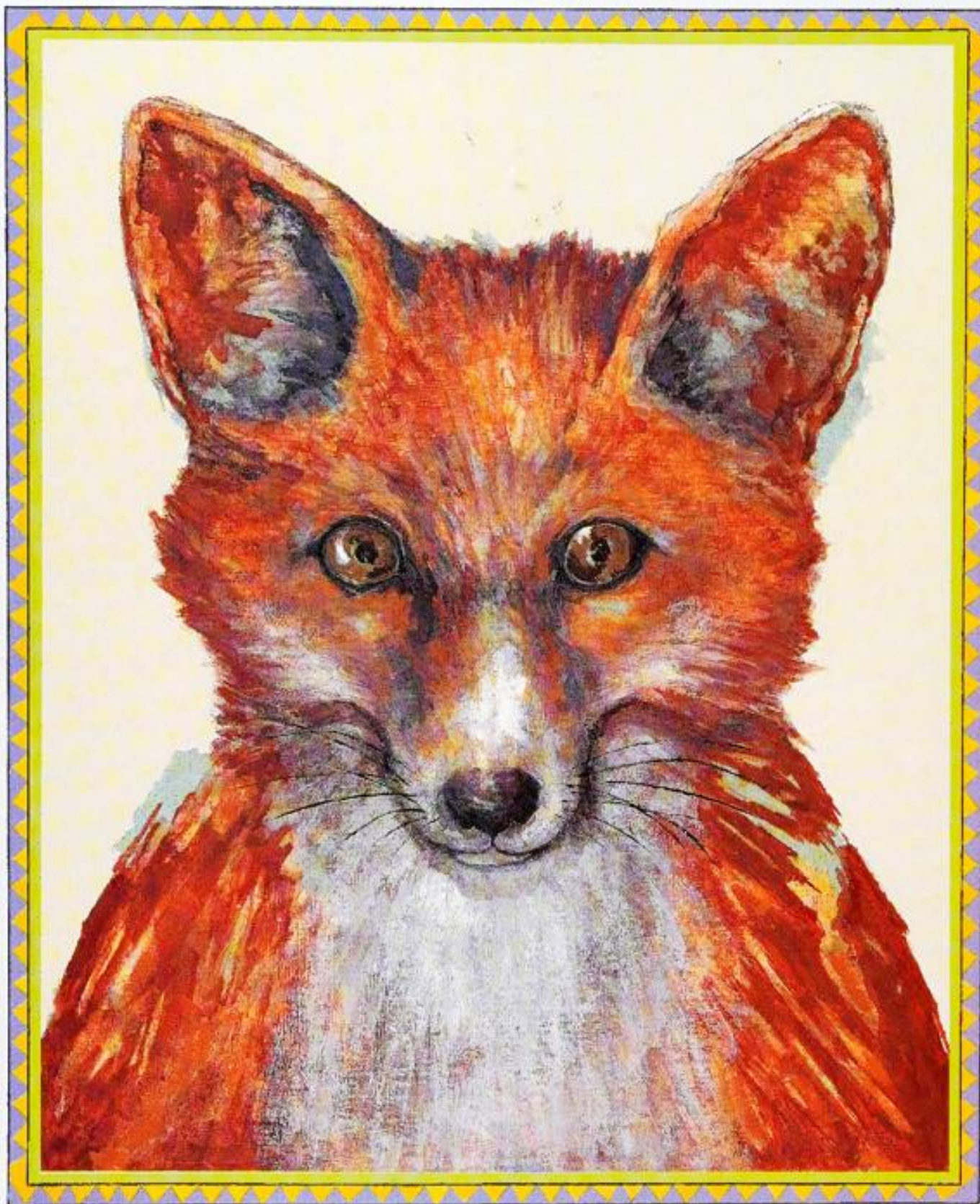
उसका फर नरम, और मूंछें सुंदर थीं.
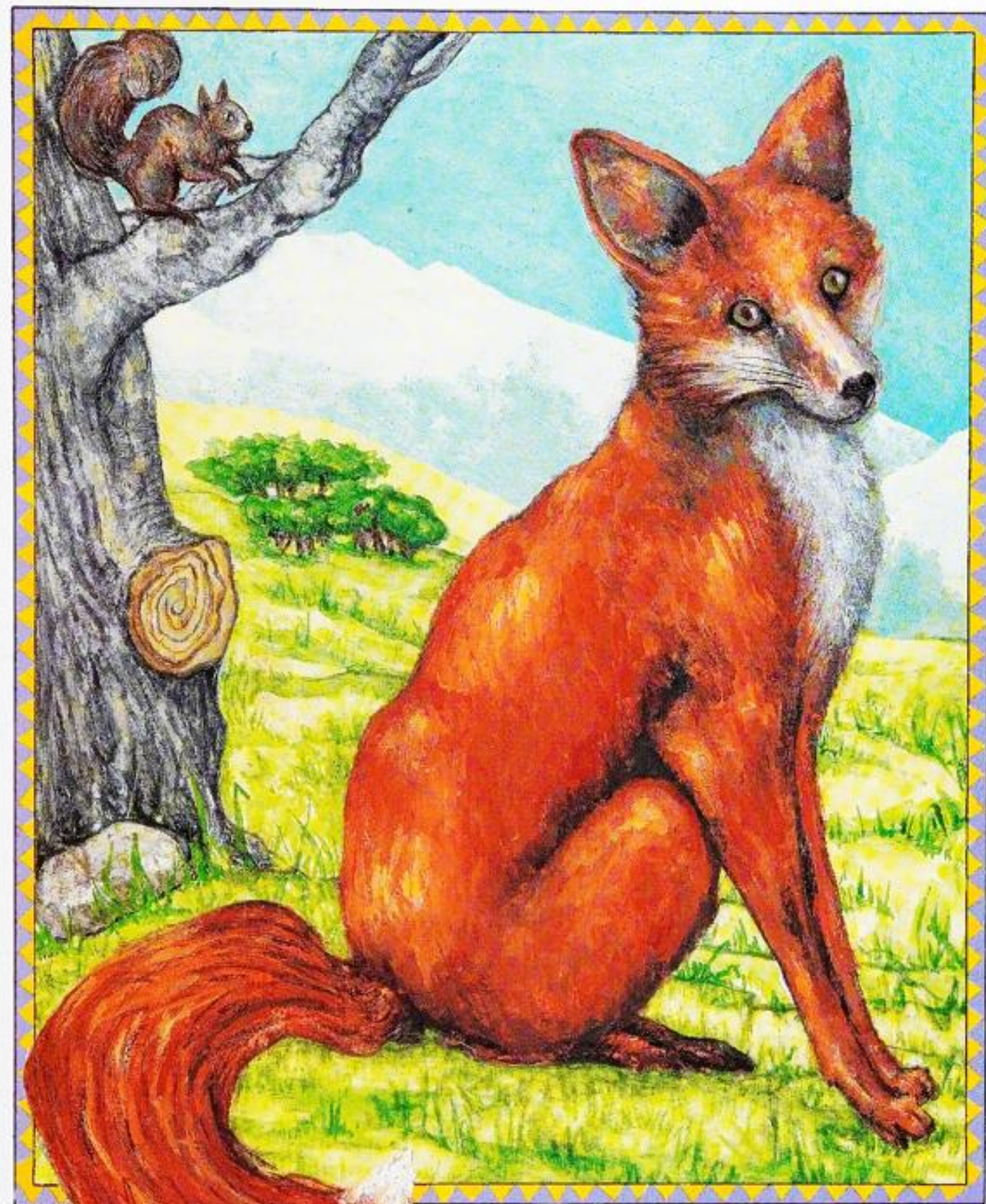
उसकी एक लंबी, झबरीली पूंछ थी.

उस लोमड़ी का नाम रोबा था. एक दिन वो सड़क के किनारे अपने पंजों से मूंछों को कंघी कर रही थी, तभी एक आदमी उसके पास आया.

"तुम कभी थको नहीं!" आदमी ने लोमड़ी से कहा.

"आप हमेशा खुश रहें!" रोबा ने जवाब दिया.

"आज मैं खुद को काफी उदार महसूस कर रहा हूँ," आदमी ने लोमड़ी कहा. "बताओ, तुम कुछ चाहती हो?"

रोबा ने कहा, "मुझे एक मुर्गी चाहिए, क्योंकि लोमड़ियों को मुर्गियां खाना पसंद है."
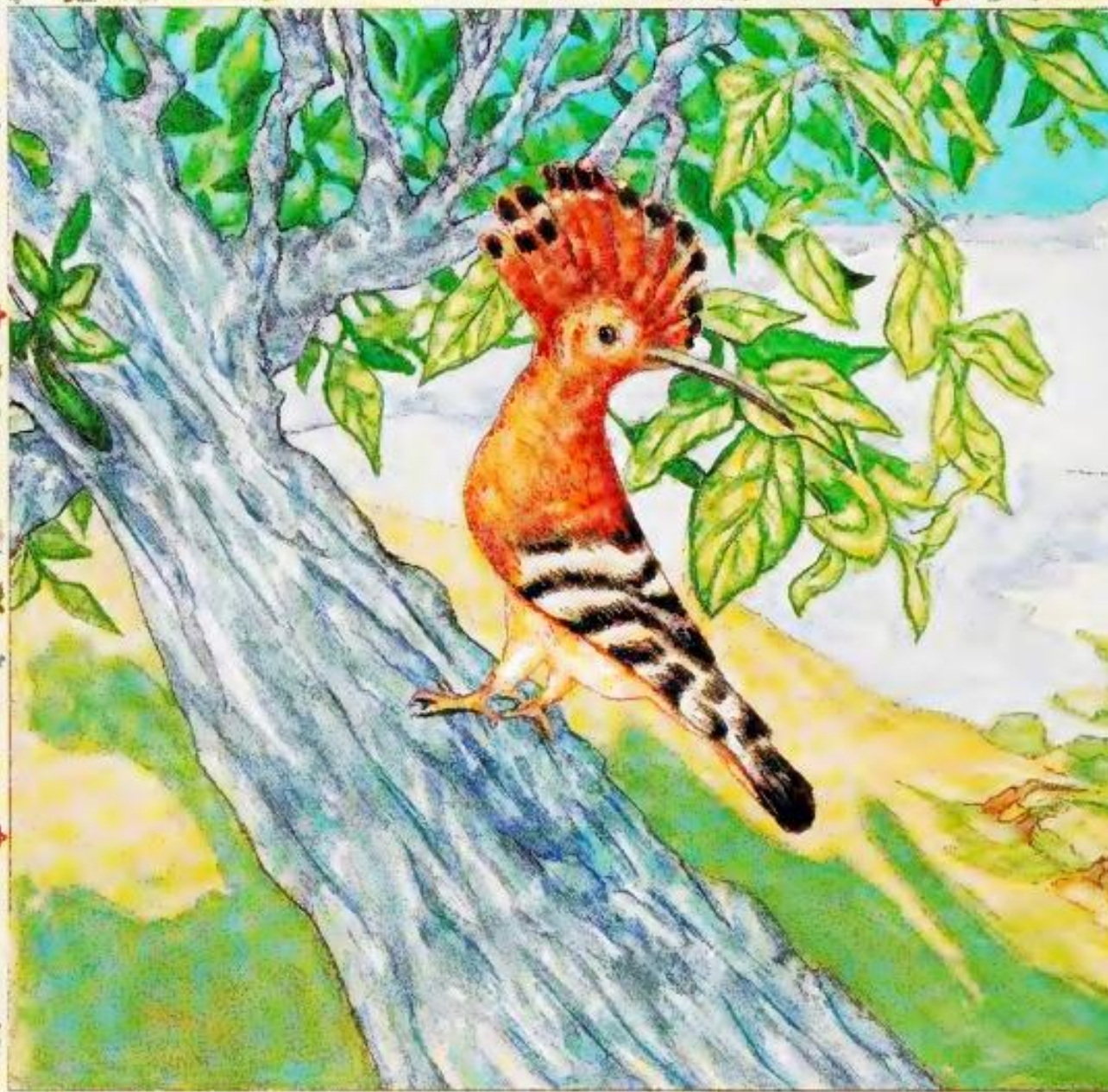
"तो मेरे साथ चलो, और मैं तुम्हें एक मुर्गी दूंगा!" आदमी ने जवाब दिया. "मेरे घर पर तमाम मुर्गियां हैं. मैं अपने घर के पिछवाड़े में जाऊँगा और तुम्हारे लिए एक मुर्गी लेकर आऊंगा."

"वो तो बहुत अद्भुत होगा!" रोबा ने कहा.
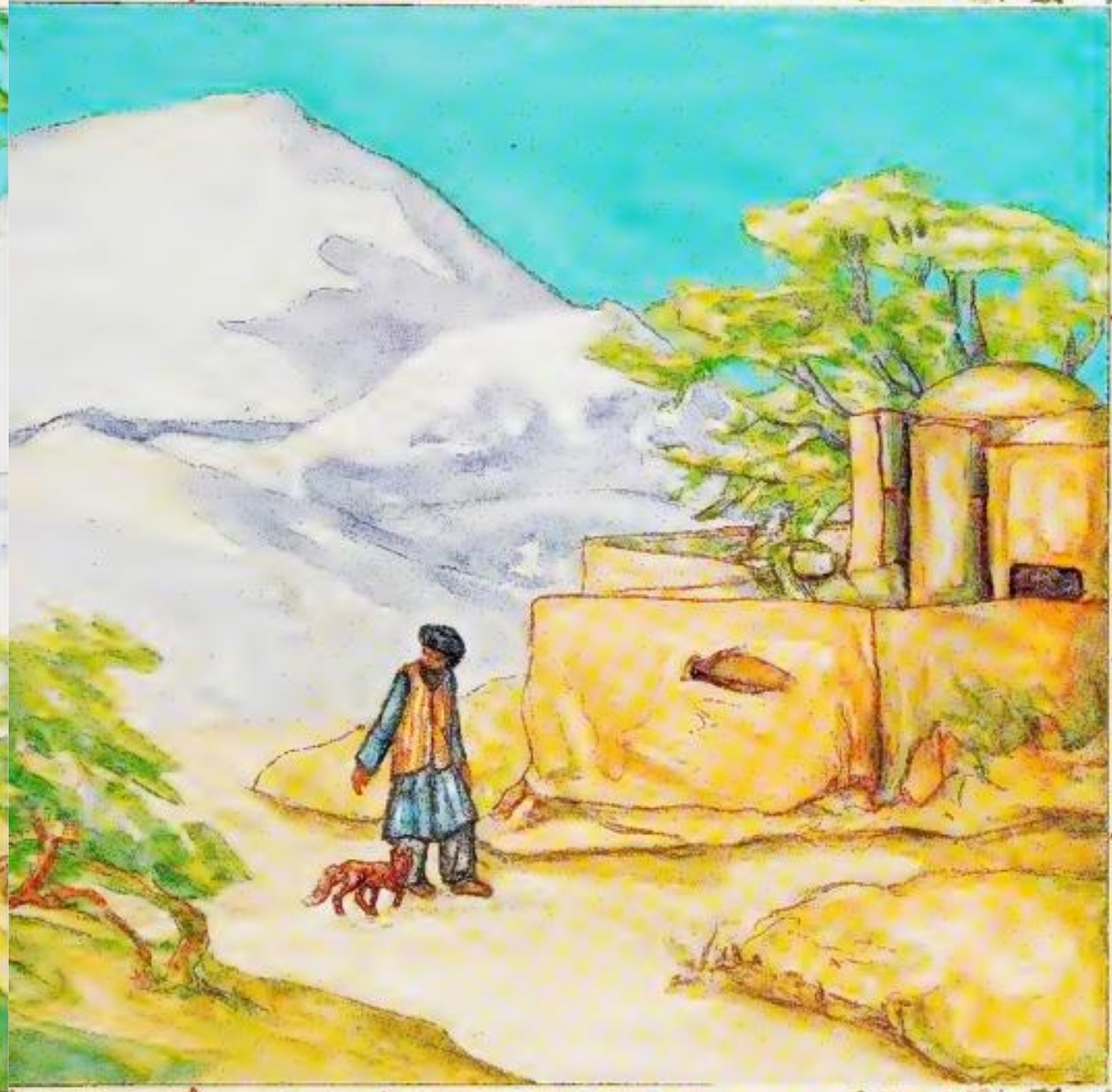
और फिर लोमड़ी, आदमी के बगल में सड़क पर चलती रही.

जब वे आदमी के घर पहुँचे, तो उसने कहा, "बाहर रुको. मैं आँगन में जाकर तुम्हारे लिए एक मुर्गी लेकर आता हूँ."

रोबा प्रतीक्षा करती रही और

वो आदमी अपने घर में चला गया.

फिर उस आदमी ने एक बोरी ली और उसमें कुछ पत्थर डाले. आदमी ने दिखावा किया कि बोरी में मुर्गी थी. सच में उसका लोमड़ी को मुर्गी देने का कोई इरादा नहीं था!
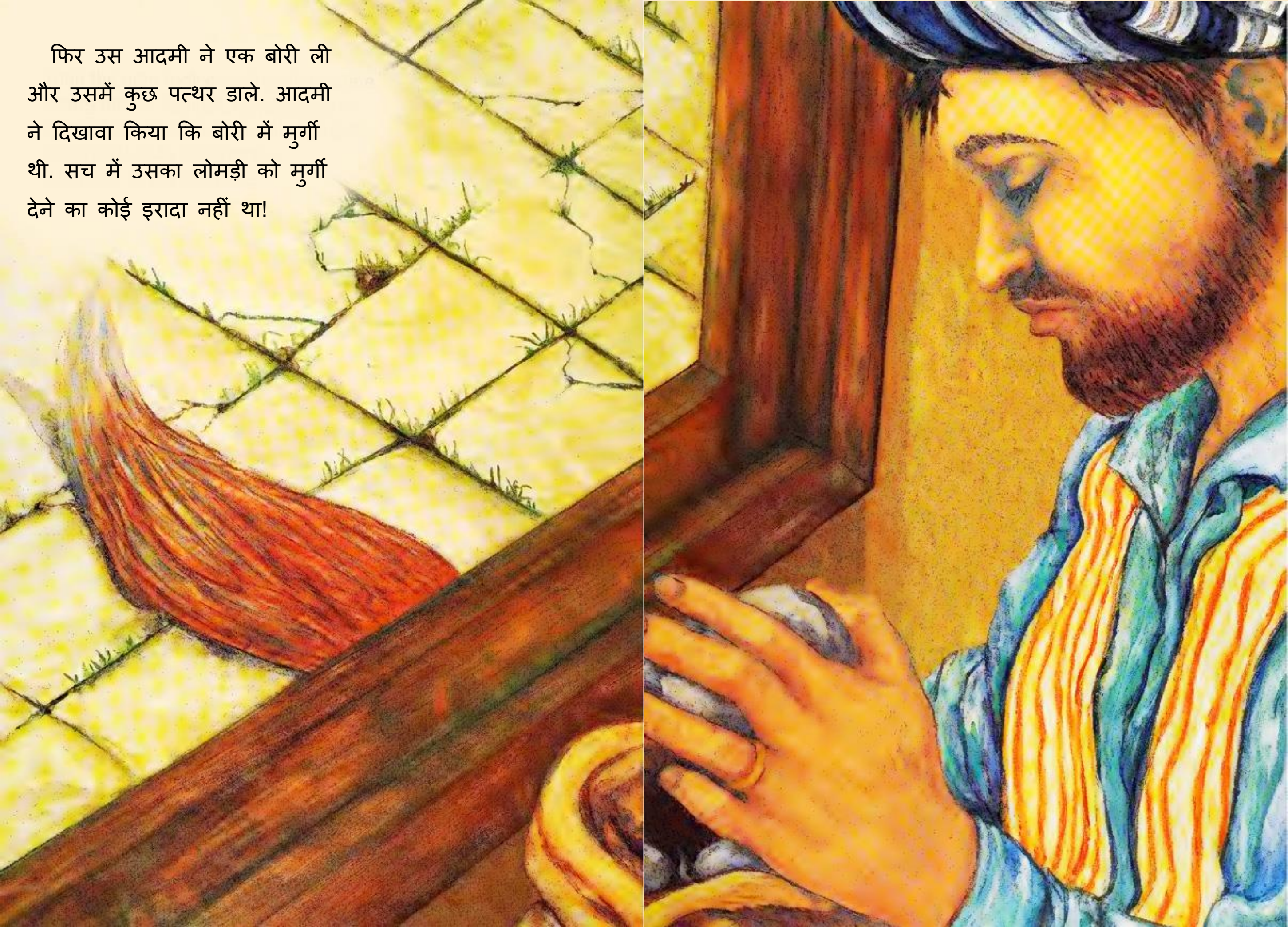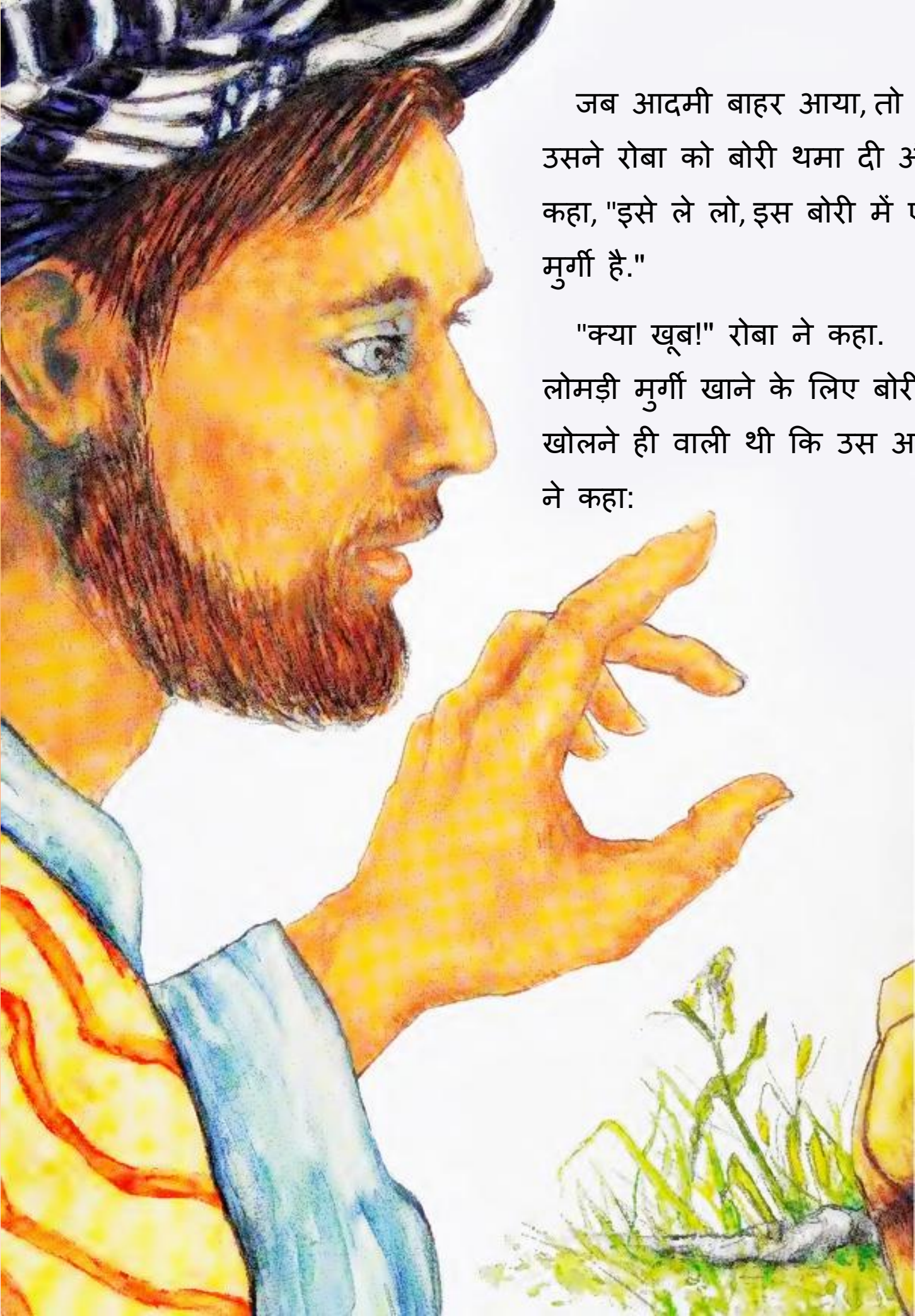
जब आदमी बाहर आया, तो उसने रोबा को बोरी थमा दी और कहा, "इसे ले लो, इस बोरी में एक मुर्गी है."

"क्या खूब!" रोबा ने कहा. लोमड़ी मुर्गी खाने के लिए बोरी खोलने ही वाली थी कि उस आदमी ने कहा:

"नहीं! इसे यहाँ मत खोलो!"

"क्यों नहीं?" रोबा से पूछा.

"देखो," उस आदमी ने कहा, "यहाँ आसपास के किसान हमें देख सकते हैं, और उन्हें मेरा एक लोमड़ी को मुर्गी देना पसंद नहीं आएगा."

असल में वो बात बिल्कुल सच नहीं थी. वो आदमी नहीं चाहता था कि लोमड़ी यह देखे कि बोरी में सिर्फ पत्थर ही भरे थे.
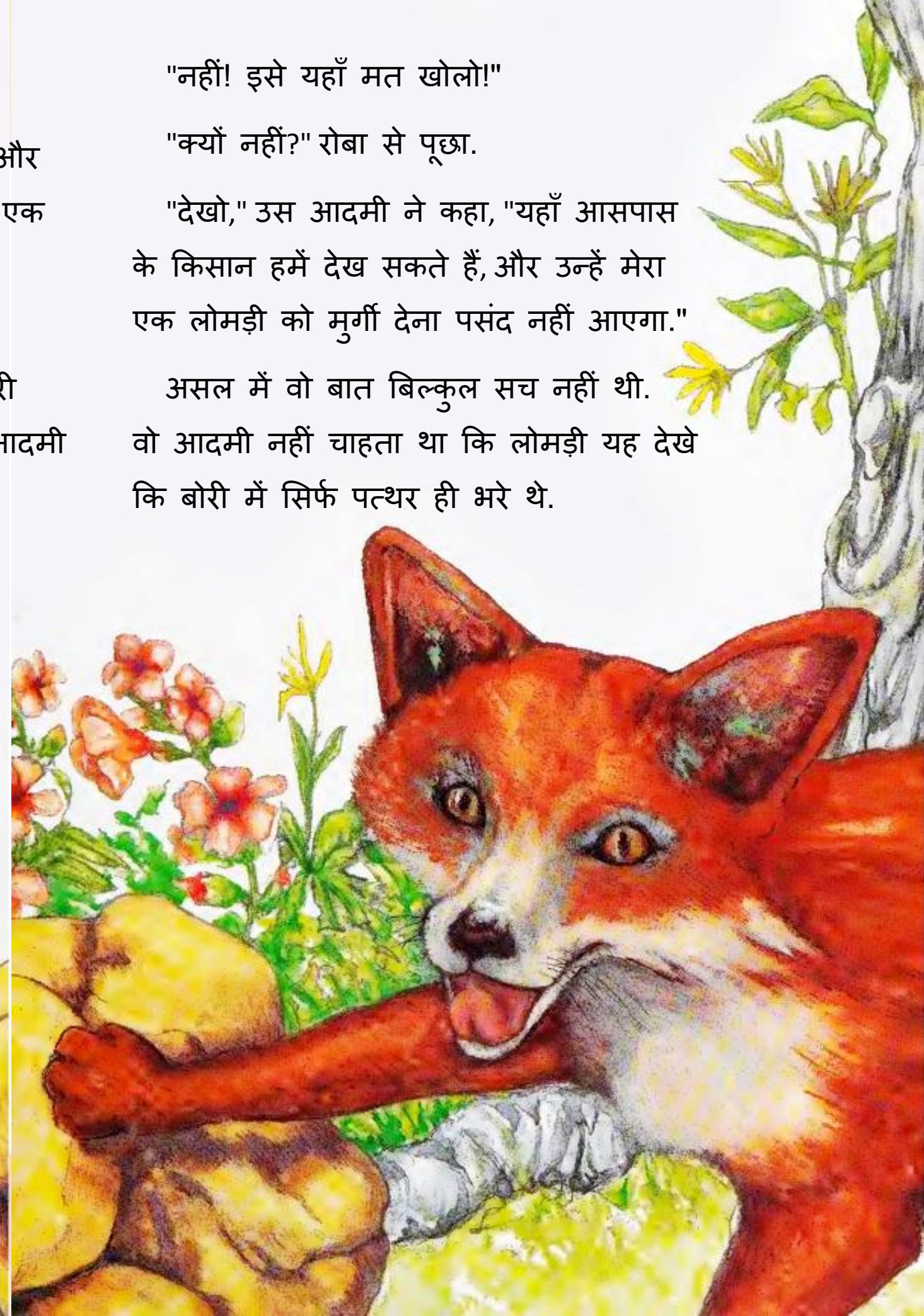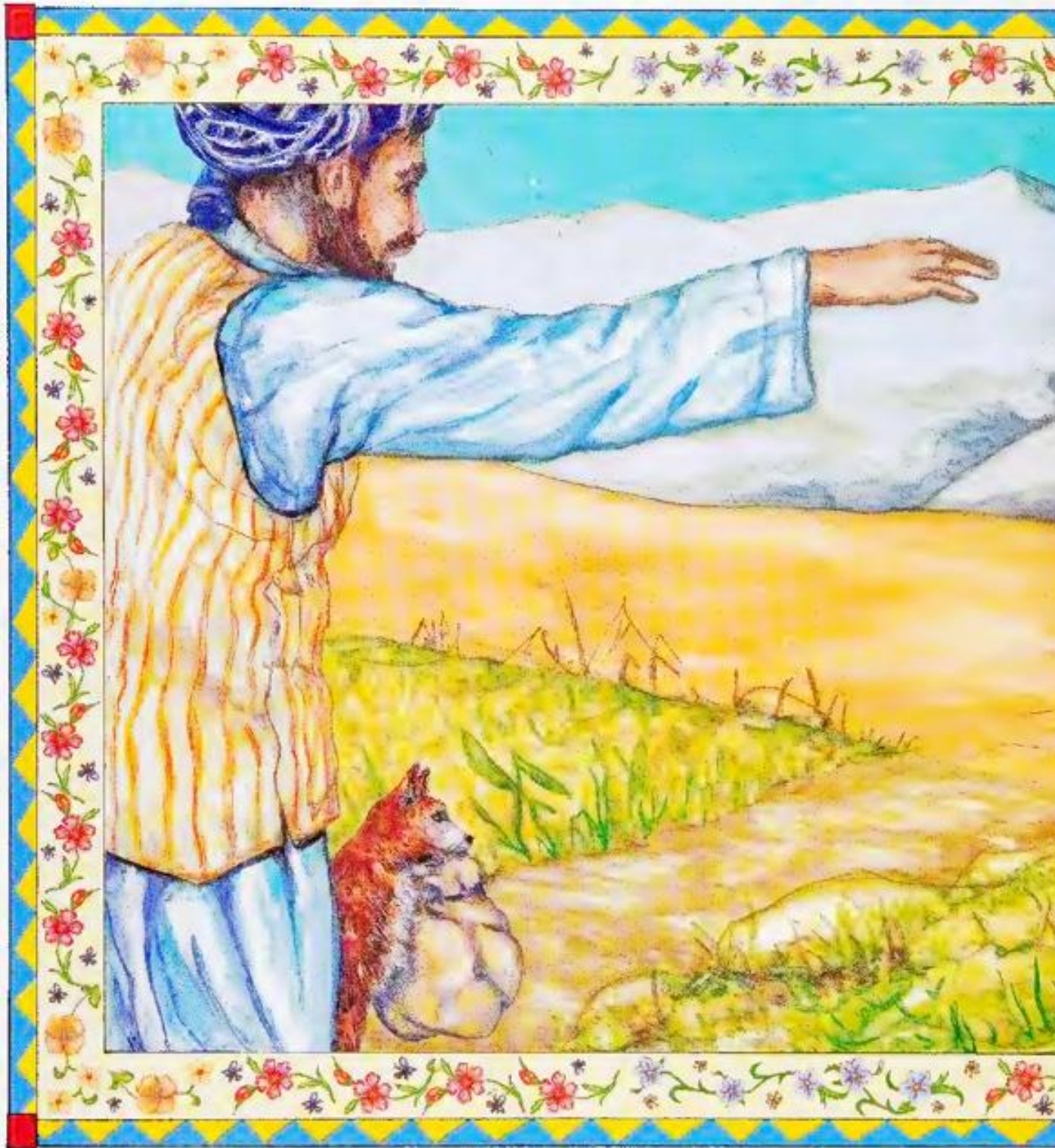
"फिर मैं क्या करूं?" रोबा ने पूछा.

"देखो, वहाँ पर कुछ झाड़ियां हैं," आदमी ने इशारे से दिखाया. "तुम वहाँ ले जाकर बोरी को खोलो. वहां तुम्हें कोई नहीं देखेगा, और तुम मुर्गी को शांति से खा सकोगी."
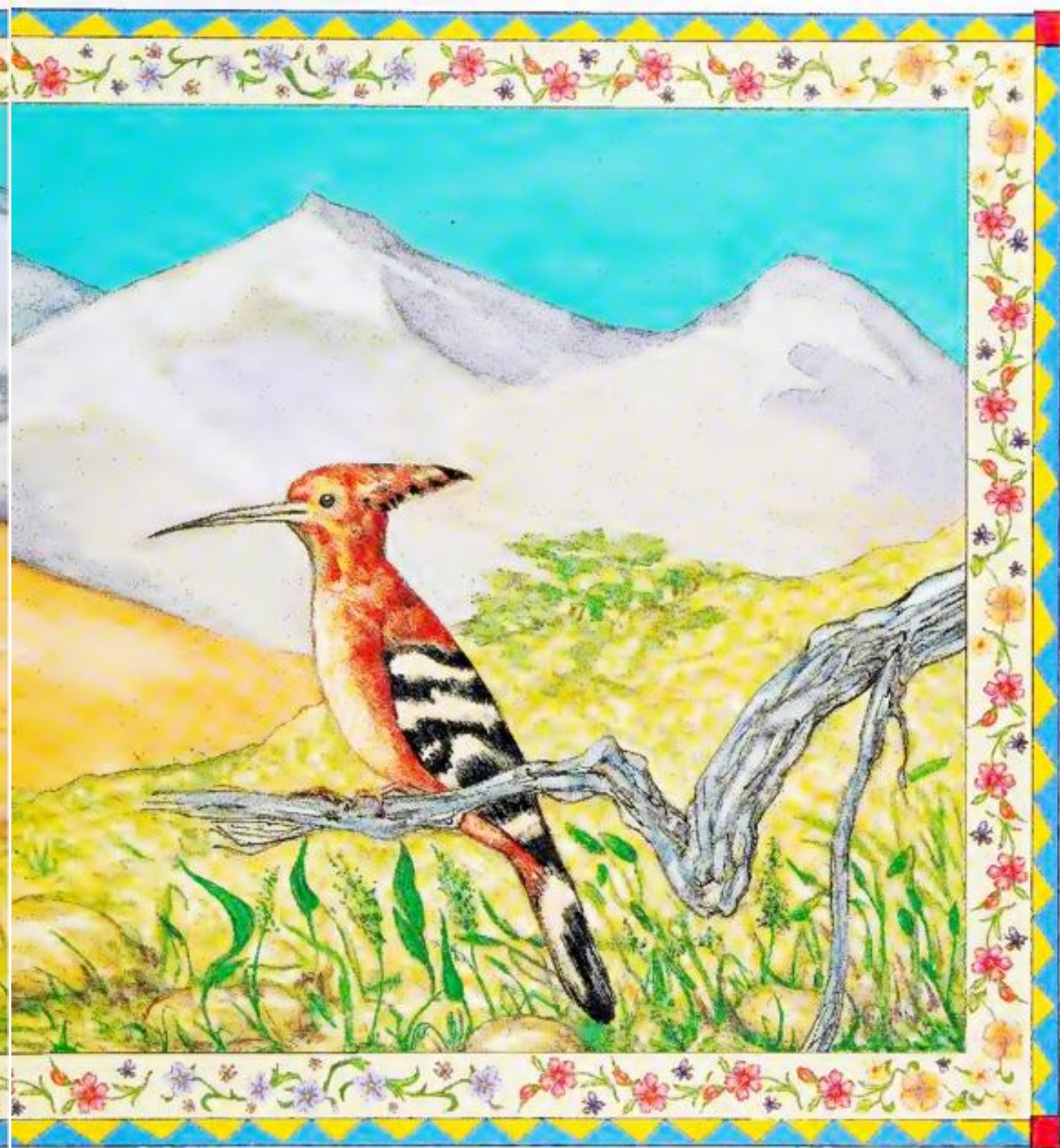
"यह एक अच्छा विचार है," रोबा ने कहा. "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!"

और फिर लोमड़ी बोरी को मुंह में दबाकर झाड़ियों तक गई.
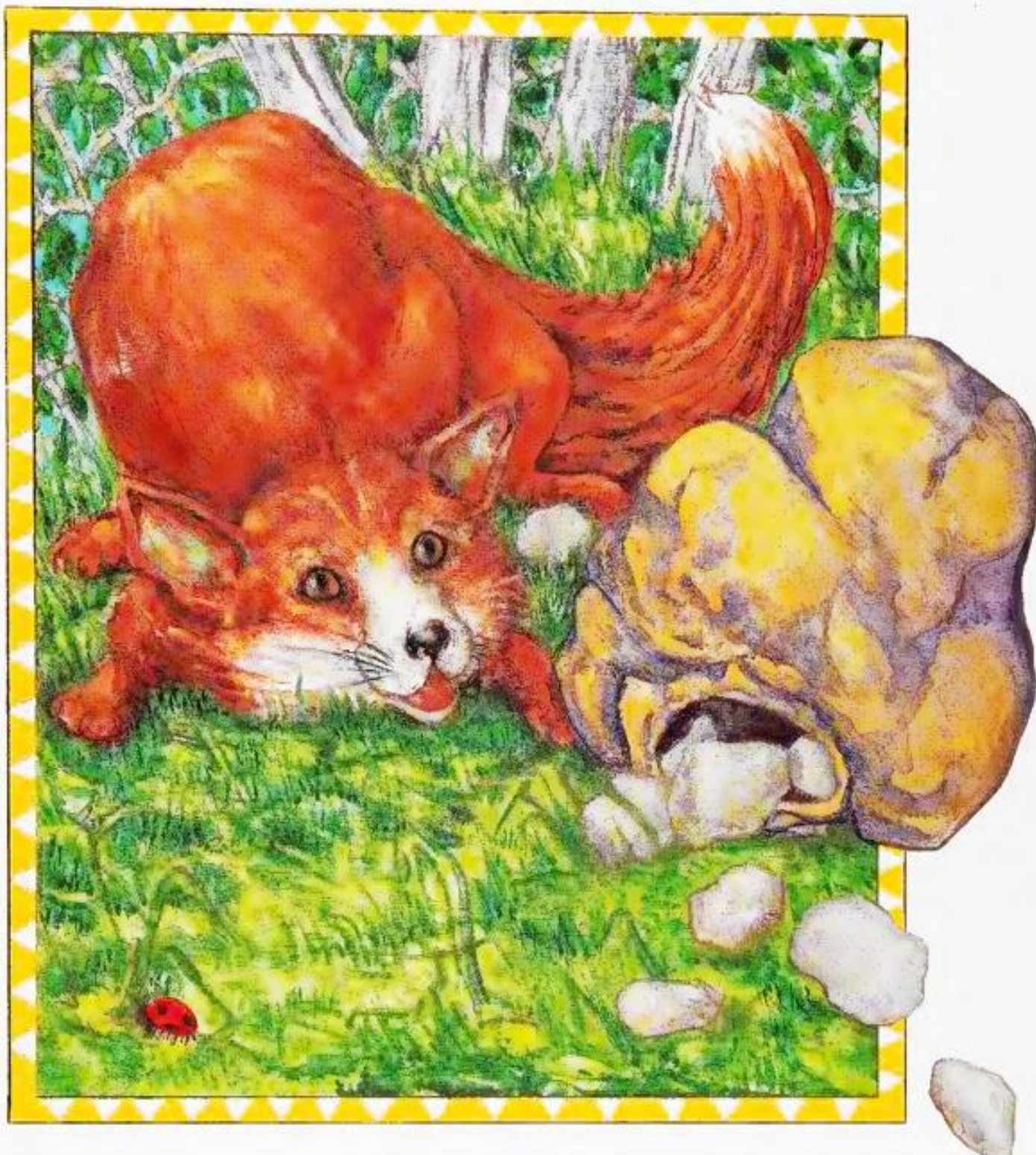
रोबा जैसे ही झाड़ियों के घुसी वैसे ही उसने बोरी खोली. उसे बोरी के अंदर पत्थर दिखे.

"अजीब बात है!" वो अपने आप से बड़बड़ाई. "ये कैसा भद्दा मज़ाक है?"
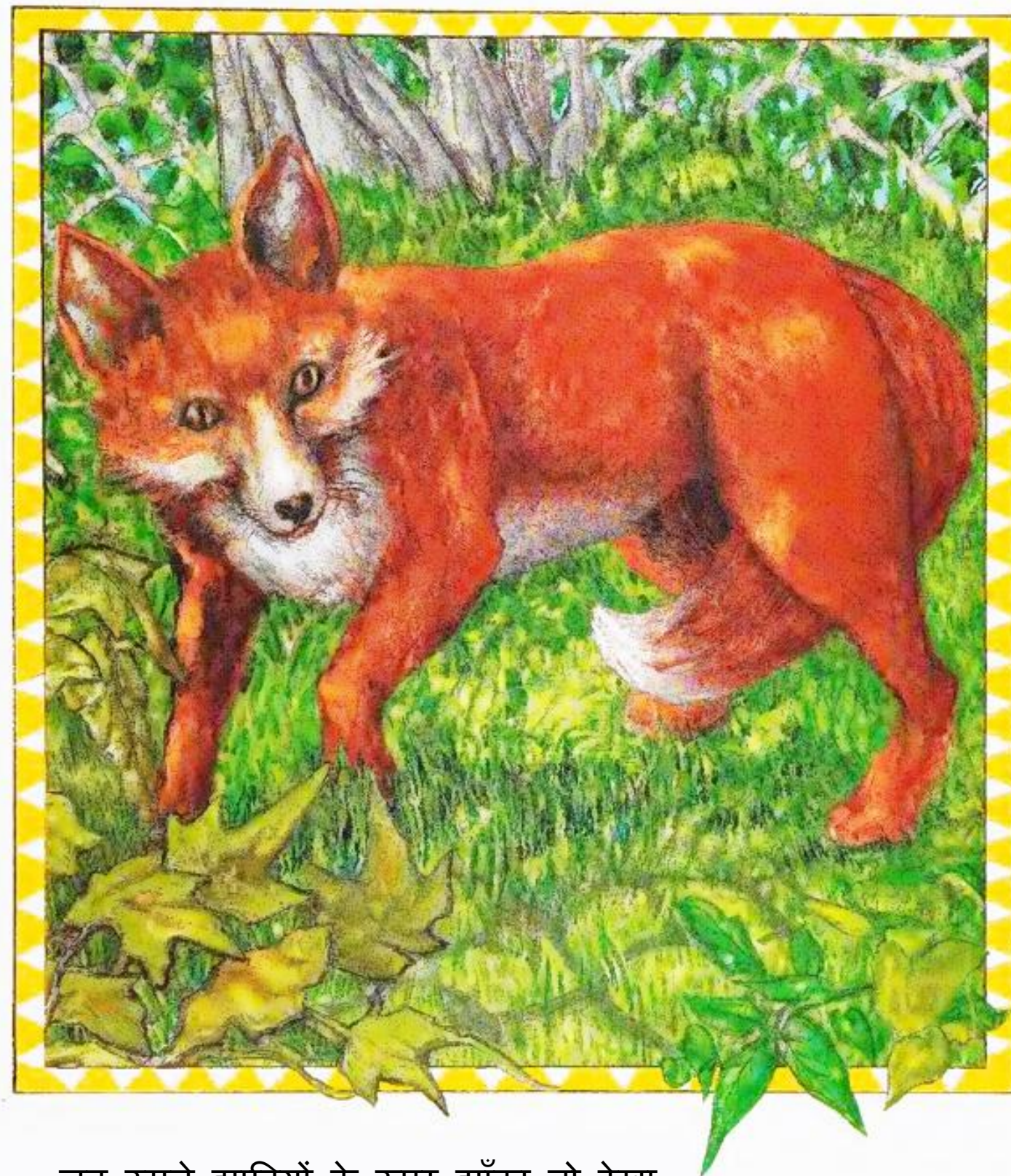
जब उसने झाड़ियों के ऊपर झाँका तो देखा तब तक उसके ऊपर एक जाल गिर चुका था. वो वैसा ही जाल था जो शिकारी, झाड़ियों में छिपने वाली किसी भी लोमड़ी को पकड़ने के लिए लगाते हैं.

पहले तो रोबा चिंतित हुई क्योंकि उसे
लगा कि शायद वो जाल से कभी बाहर ही न
निकल पाए. लेकिन रोबा बहुत चालाक थी.

तुम्हें पता ही होगा कि लोमड़ियाँ बहुत चालाक होती हैं.
उसने बोरी में रखे पत्थरों को गौर से देखा तो
उसमें उसे एक नुकीला धारदार पत्थर दिखाई दिया.
उससे लोमड़ी ने तुरंत जाल काटना शुरू कर दिया.
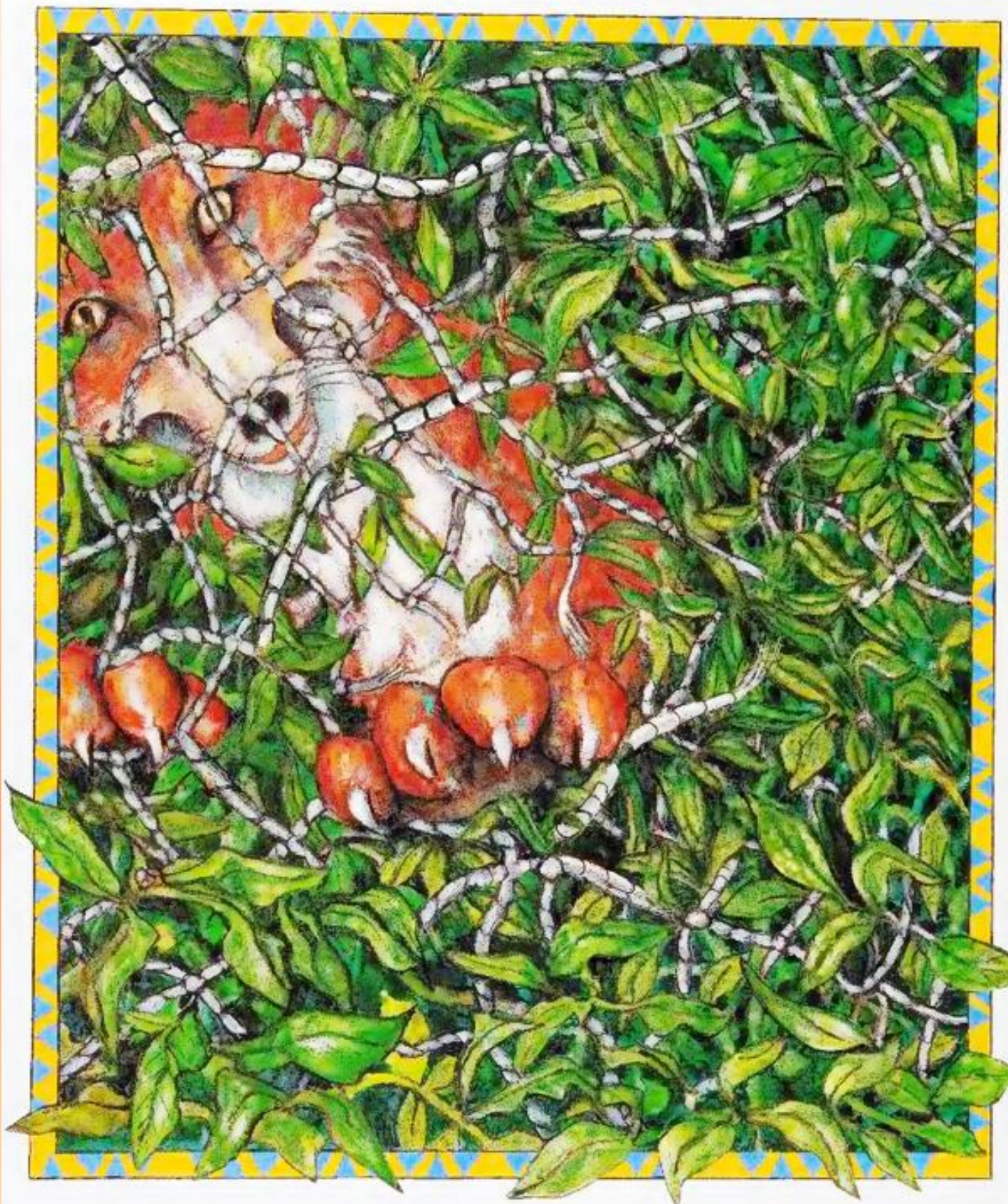
पहले उसने अपने सामने वाले बाएं पंजे के बाहर निकलने लायक एक बड़ा छेद काटा.
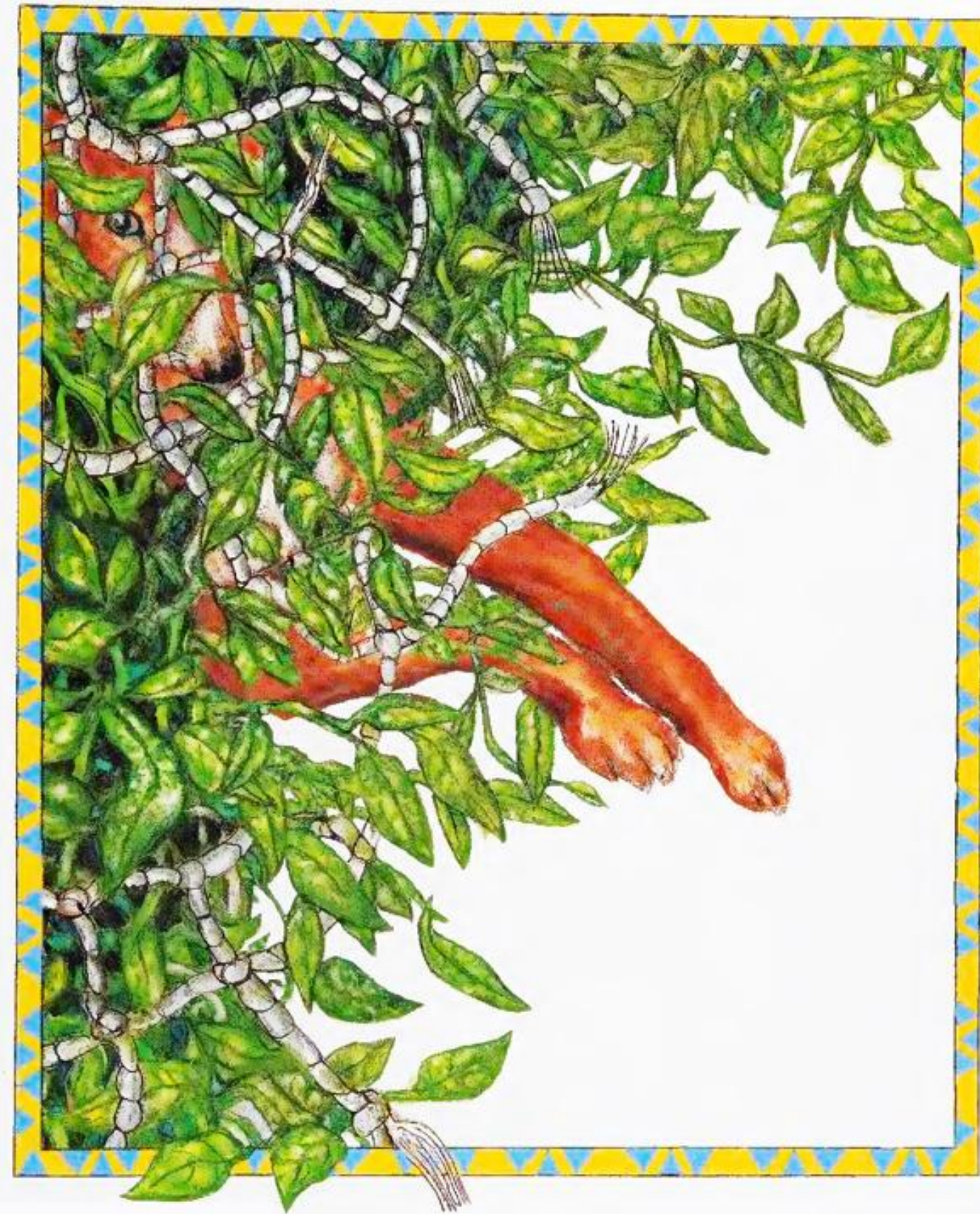
उसने कुछ और काटा और जल्द ही छेद से उसके बाएं और दाएं दोनों पंजे बाहर निकल सकते थे.

उसने धीरे-धीरे जाल को कुछ और काटा, और जल्द ही उसके सामने वाले पंजे और उसकी नाक भी उस छेद में से बाहर निकल पाई.
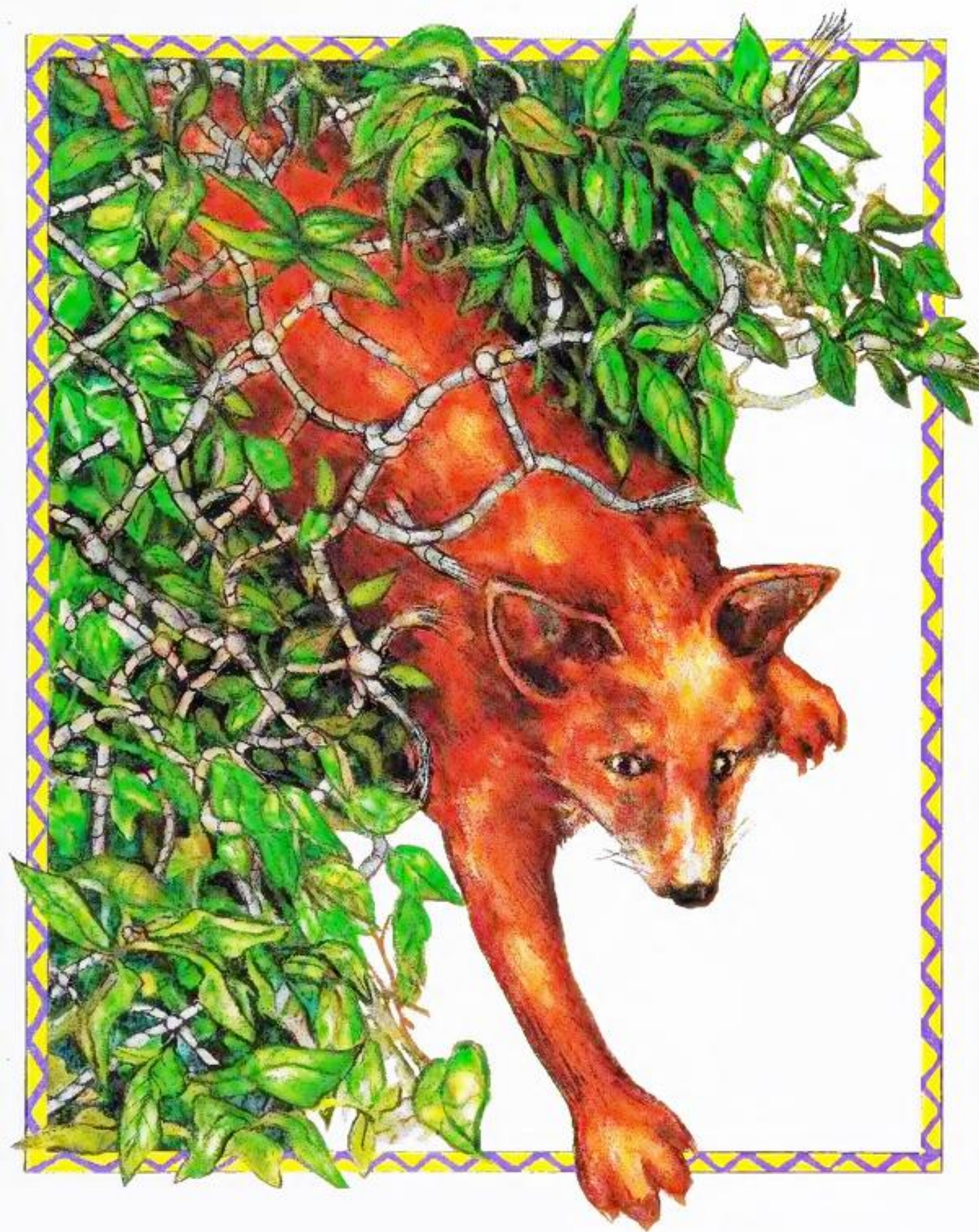
उसने कुछ और जाल काटा, और जल्द ही उसके सामने वाले पंजे, नाक और उसका बाकी सिर भी छेद से बाहर निकल पाया.

फिर उसने धक्का दिया और थोड़ा
और दम लगाया और अंत में ...

रोबा बच निकली!
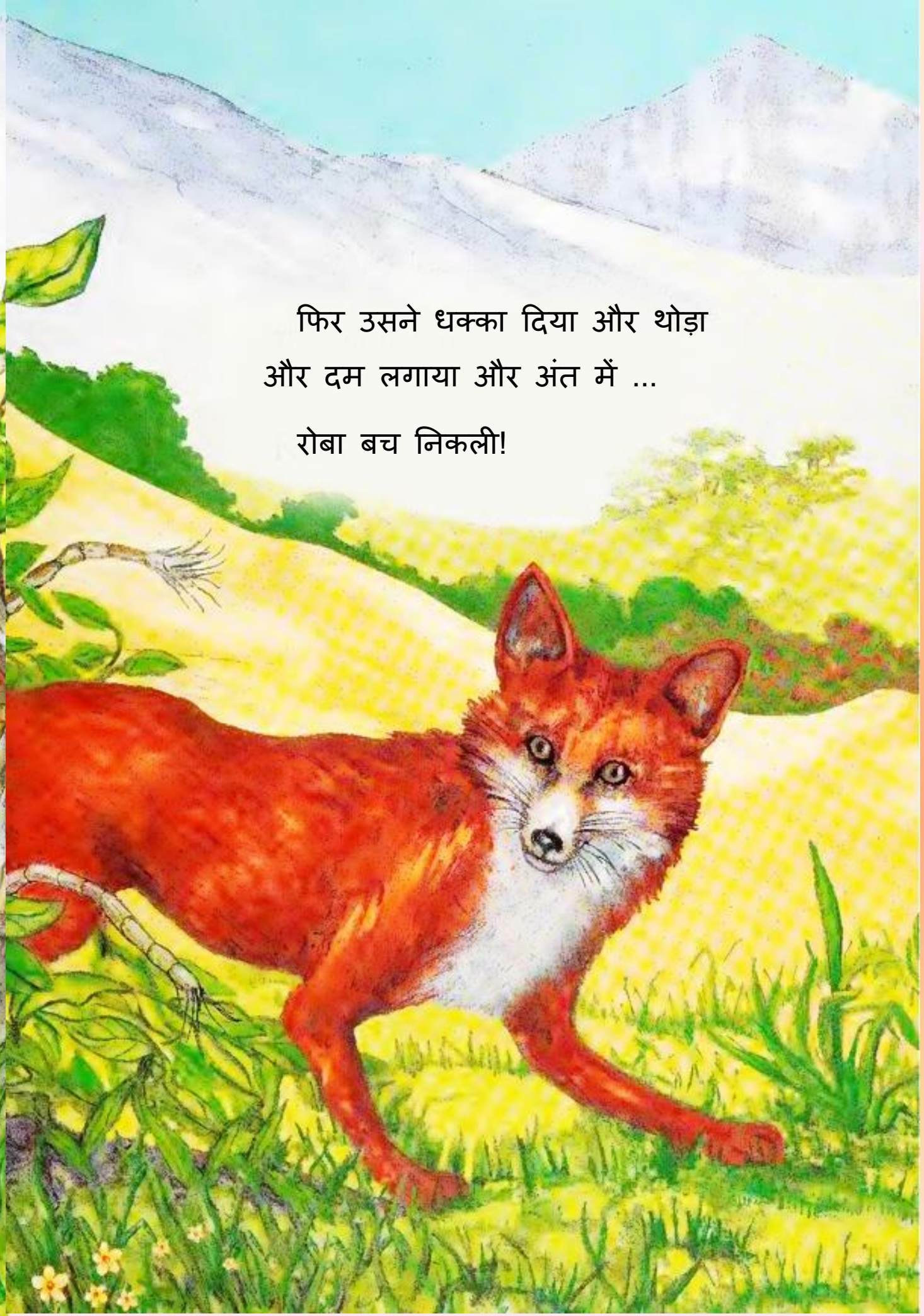
रोबा जैसे ही सड़क पर भागी, वो हँसी और हँसी और हँसी.

"मनुष्य सोचते हैं कि वे ही चतुर हैं," उसने खुद से कहा, "लेकिन लोमड़ियां भी बहुत चालाक होती हैं!"

अब, सभी लोमड़ियों को रोबा और उस आदमी की कहानी पता है जिसने रोबा को मुर्गी देने का वादा किया था. और यही कारण है कि अब जब आप किसी लोमड़ी को देखकर उसे अपने साथ चलने को कहते हैं, तो वो आपके साथ नहीं आती है.

और इसी वजह से लोमड़ियों को पकड़ना एक बहुत मुश्किल काम है क्योंकि वे एक स्वतंत्र और सुखी जीवन जीती हैं.